मॉडल सेट-07

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवाय हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6 x 2 =12

हमारे जीवन में उत्साह का विशेष स्थान है। किसी काम को करने के लिए सदा तैयार रहना तथा उस काम को करने में आनन्द का अनुभव करना उत्साह के मुख्य लक्षण हैं। उत्साह कई प्रकार का होता है, परन्तु सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरणा देता है। मनुष्य किसी भी कारणवश जब किसी के कष्ट को दूर करने का संकल्प करता है तब जिस सुख का वह अनुभव करता है वह सुख विशेष रूप से प्रेरणा देने वाला होता है। इसी उत्साह के लिए कवियों ने कहा है 'साहस से भरी हुई उमंग ही उत्साह है।' जिस भी कार्य को करने के लिए मनुष्य में कष्ट, दुःख या हानि को सहन करने की ताकत आती है, उन सबसे उत्पन्न आनन्द ही उत्साह कहलाता है। 'उत्साह' आनन्द और साहस का मिला-जुला रूप है। उत्साह एक ऐसा मनोभाव है जो किसी कार्य विशेष में तो मनुष्य को प्रेरित करता ही है, साथ ही इस भाव के होने पर अन्य कार्यों में भी उसकी शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

(क) उत्साह का मुख्य लक्षण क्या है?

(ख) सच्चा उत्साह क्या होता है?

(ग) उत्साह के लिए कवियों ने क्या कहा है?

(घ) आनन्द और साहस का मिला-जुला रूप क्या है?

(च) उत्साह कैसा मनोभाव ह?

(छ) एक उपयुक्त शीर्षक दें।

(ब) निम्नांकित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें- 4 x 2 =8

शिवप्रसाद 'रुद्र' का जन्म काशी में हुआ था। इनकी शिक्षा काशी के हरिश्चन्द्र कॉलेज, काशी हिन्द् विश्वविद्यालय तथा क्वींस कॉलेज में हुई। इन्होंने स्कूल तथा विश्वविद्यालय में अध्यापन-कार्य किया। इन्होंने कई पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया। इन्हें अनेक भाषाओं का ज्ञान था। ये बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। ये एक सफल उपन्यासकार, नाटककार, गीतकार, व्यंग्यकार, चित्रकार एवं पत्रकार थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ बहती गंगा, सुचिताच, ताल-तलैया, गज़लिका, परीक्षा-पचीसी हैं। 'बहती गंगा' में इन्होंने काशी के 200 वर्षों के जीवन-प्रवाह की अनेक झाँकियाँ लिखी हैं। इन्होंने अपनी झाँकियों में यथार्थ और आदर्श, दंत कथा और इतिहास, मानव-जीवन की कमजोरियाँ और उदात्त गुणों की अभिव्यक्ति की है।

(क) शिवप्रसाद का जन्म कहाँ हुआ था?

(ख) इनकी प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन हैं?

(ग) बहती गंगा में कहाँ की, कितने वर्षों की झाँकियाँ लिखी हैं?

(घ) इन्होंने अपनी झाँकियों में किसकी अभिव्यक्ति की है?

प्रश्न-2 दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर 250 शब्दों में किसी एक विषय पर निबन्ध लिखें। **10**

(क) नारी-शिक्षा

(i) नारी-शिक्षा का महत्त्व

(ii) प्राचीन काल में नारी शिक्षा

(iii) मध्यकाल में नारी शिक्षा

(iv) आधुनिक काल में नारी-शिक्षा

(v) उपसंहार

(ख) आदर्श विद्यार्थी

(i) भ्मिका

(ii) अच्छे विद्यार्थी के गुण

(iii) सहपाठियों के साथ अच्छा व्यवहार

(iv) गुरुजनों के प्रति श्रद्धा एवं आज्ञाकारिता

(v) उपसंहार

(ग) दीपावली

(i) भूमिका

(ii) कब और कैसे मनाया जाता है

(iii) पर्व मनाने के पीछे की कथाएँ एवं मान्यताएँ

(iv) साफ-सफाई एवं पर्यावरण शुद्धि का पर्व

(v) उपसंहार

प्रश्न-3 पटना-भ्रमण की चर्चा करते हुए अपने भाई के पास पत्र लिखें। **5**

अथवा

गाँव में सड़क बनवाने हेतु जिलाधिकारी के पास आवेदन-पत्र लिखें।

प्रश्न-4 सर्वनाम के भेदों को उदाहरण सहित लिखें। **5**

अथवा

उपसर्ग एवं प्रत्यय की परिभाषा उदाहरण के साथ लिखें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। **5 x 1 = 5**

(क) धर्म-अधर्म...............................समास का उदाहरण है।

(ख) प्रहार में..................................उपसर्ग है।

(ग) 'अ' का उच्चारण-स्थान.........................है।

(घ) विद्यालय का संधि-विच्छेद............................होगा।

(च) बुढ़ापा..................................संज्ञा है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करें: 5 x 1 = 5

(i) उसकी कुछ समझ में न आया।

(ii) माँ भी सोती नींद से जाग पड़ी।

(iii) उसने 'मानस' टीका लिखी है।

(iv) मैं शुद्ध गाय का दूध पीता हूँ।

(v) आगामी वर्ष तुम आये थे।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान आमने-सामने करें: 6 x 1 = 6

	स्तम्भ- 'अ'		**स्तम्भ 'ब'**
(1)	अमरकान्त	क.	हमारी नींद
(2)	गुणाकर मुले	ख.	भारत माता
(3)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	ग.	नागरी लिपि
(4)	प्रेमधन	घ.	जनतंत्र का जन्म
(5)	वीरेन डंगवाल	च.	बहादुर
(6)	सुमित्रानन्दन पंत	छ.	स्वदेशी

निर्देश: प्रश्न संख्या 8 से 20 तक प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 डुमराँव की महत्ता किस कारण से है? 3

प्रश्न-9 वाणी कब विष के समान हो जाती है? 3

प्रश्न-10 मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन कहाँ हो सकता है और क्यों? 3

प्रश्न-11 मछली छूते हुए संतु क्यों हिचक रहा था? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर इसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

चोर-गुंडा-डाकू होने वाला मदन भी कब माननेवाला था! वह झट काशू पर टूट पड़ा। दूसरे लड़के जरा हटकर इस द्वन्द्व युद्ध का मजा लेने लगे। लेकिन यह लड़ाई हड्डी और मांस की, बंगले के पिल्ले और गली के कुत्ते की लड़ाई थी। अहाते में यही लड़ाई हुई रहती, तो काशू शेर हो जाता। वहाँ से एक मिनट बाद ही रोता हुआ जान लेकर भाग निकला। महल और झोपड़ीवालों की लड़ाई में अक्सर महलवाले ही जीतते हैं, पर उसी हालत में, जब दूसरे झोपड़ी वाले उनकी मदद अपने ही खिलाफ करते हैं।

क- यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

ख- इस पाठ के लेखक कौन हैं? 1

ग- इस गद्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-13 'एक वृक्ष की हत्या' कविता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालें। 3

प्रश्न-14 'स्वर्ण शस्य पर पद-तल लुंठित, धरती सा सहिष्णु मन कुंठित' की व्याख्या करें।

3

प्रश्न-15 'देवता मिलेगे खेतों में खलिहानों में' के माध्यम से कवि किस देवता की बात करते हैं और क्यों? 3

प्रश्न-16 कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है? 3

प्रश्न-17 निम्नांकित पद्यांश के आधार पर नीच लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

''कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से
बचाना है
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से
बचाना है- जंगल का मरुस्थल हो जाने से
बचाना है- मनुष्य को जंगल हो जाने से''

क- प्रस्तुत पंक्तियाँ किस पाठ से उद्धृत हैं? 1

ख- इस पाठ के रचनाकार कौन हैं? 1

ग- इस पद्यांश का भाव अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-18 मंगु के प्रति माँ और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार में जो फर्क है उसे अपने शब्दों में लिखें। 3

प्रश्न-19 पाप्पति कौन थी और वह शहर क्यों लाई गई थी? 3

प्रश्न-20 मगम्मा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 4

उत्तर मॉडल सेट-07

उत्तर 1. (अ)

क- किसी काम को करने के लिए सदा तैयार रहना तथा उस काम को करने में आनन्द का अनुभव करना उत्साह के मुख्य लक्षण हैं।

ख- सच्चा उत्साह वही होता है जो मनुष्य को करने के लिए प्रेरणा देता है।

ग- साहस से भरी हुई उमंग ही उत्साह है।

घ- उत्साह।

च- उत्साह एक ऐसा मनोभाव है जो किसी कार्य विशेष में तो मनुष्य को प्रेरित करता ही है, साथ ही इस भाव के होने पर अन्य कार्यों में भी उसकी शक्ति को बढ़ावा मिलता है।

छ- 'उत्साह'।

(ब) क- काशी में।

ख- बहती गंगा, सुचितास, ताल-तलैया, गज़लिका, परीक्षा-पचीसी इनकी प्रमुख रचनाएँ है।

ग- काशी के 200 वर्षों के जीवन-प्रवाह की अनेक झाँकियाँ लिखीं हैं।

घ- इन्होंने अपनी झाँकियों में यथार्थ और आदर्श, दंत कथा और इतिहास, मानव-जीवन की कमजोरियाँ और उदात्त गुणों की अभिव्यक्ति की है।

उत्तर-2 (क)- नारी-शिक्षा

(i) किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति एवं उन्नति का मूल्यांकन वहाँ के नारी-वर्ग की स्थिति को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। जो राष्ट्र स्त्री को केवल घर की चहारदीवारी तक ही सीमित रखना चाहते हैं, वे

दुर्भाग्य से सभ्यता-संस्कृति या शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं। अतः समाज में स्त्री-शिक्षा का योगदान महत्त्वपूर्ण होता है।

(ii) प्राचीन युग में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्य में समान रूप से भाग लेने की अधिकारिणी थीं। प्राचीन युग में नारी का बहुत सम्मान था।

(iii) मध्यकाल में नारी को गुलाम और भोग्या बनाकर पतन की दिशा की ओर मोड़ दिया गया। सहधर्मिणी के स्थान पर वह केवल दासी एवं वासना-पूर्ति का साधन मात्र रह गई। इस समय में भी गुलबदन बेगम एवं रौशन आरा जैसी स्त्रियाँ शिक्षित थीं।

(iv) आधुनिक काल में नारी ने हर क्षेत्र में विकास किया है। भारतीय संविधान में नर-नारी को समान अधिकार दिये गये हैं। शिक्षित महिला वर्ग ने स्वयं परदे का त्याग किया है। आज स्त्रियाँ पुरुषों से कंधे-से-कंधा मिलाकर समाज के निर्माण में सहयोग दे रही हैं।

(v) अतः स्त्रियों के प्रति दुर्भावनाओं को त्यागकर उनको शिक्षित करने में प्रत्येक व्यक्ति को सहयोग करना चाहिए। स्त्री-शिक्षा से ही समाज का सर्वांगीण विकास होगा ऐसा चिन्तकों का कहना है, जो यथार्थ है।

ख- आदर्श विद्यार्थी

(i) विद्यार्थी से तात्पर्य विद्या को प्राप्त करने वाला, विद्यार्जन करने वाला से होता है। आदर्श विद्यार्थी वही है जो सीखने एवं जानने की इच्छा से ओतप्रोत हो एवं ज्ञान प्राप्त करने हेतु सदा उत्कंठित हो। विद्यार्थी के जीवन में सर्वाधिक महत्त्व विद्या और ज्ञान का होता है।

(ii) आदर्श विद्यार्थी का पहला गुण होता है- 'जिज्ञासा'। वह विषयों के सन्दर्भ में नित नई-नई जानकारियाँ प्राप्त करना चाहता है। अभिनव ज्ञानों की प्राप्ति

हेतु अध्यापकों एवं पुस्तकों पर आश्रित नहीं रहता अपितु जहाँ कहीं भी जिस किसी से भी ज्ञान प्राप्त होता है वह ज्ञानार्जन करता है। सांसारिक भोग-विलास उसे आकर्षित नहीं करते हैं। वह उसे तुच्छ जानकर त्याग करता है। ऐसा विद्यार्थी अपने परिश्रम, तपस्या एवं लगन की आग में तपकर कुन्दन बनता है। इनकी दिनचर्या नियमित होती है। ये अध्ययन के साथ-साथ व्यायाम, क्रीड़ा, शारीरिक स्वास्थ्य पर भी उतना ही ध्यान देते हैं। ये 'सादा जीवन उच्च विचार' वाले होते हैं। न केवल पाठ्य-सामग्री अपितु सहगामी क्रियाओं में भी बढ़-चढ़कर ये हिस्सा लेते हैं।

(iii) आदर्श छात्र अपने सहपाठियों के साथ भी अच्छा व्यवहार करता है। वह अपने सहपाठियों से बैर की भावना नहीं रखता। कम बुद्धिवाले साथियों को विषय-वस्तु एवं शास्त्र में पारंगत कराने के प्रयत्न करता है। मेधावियों से ज्ञानार्जन भी करता है। ऐसे छात्रों का उद्देश्य एक मात्र परोक्षा में सर्वाधिक अंक लाना नहीं होता अपितु वास्तविक एवं यथार्थ ज्ञानार्जन ही उसका उद्देश्य होता है।

(iv) ऐसे छात्र गुरुजनों के प्रति असीम श्रद्धा रखते हैं एवं गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। वे 'गुरु' एवं 'गोविन्द' में गुरु को ही ज्यादा महत्त्व देते हैं। ऐसे छात्रों का विश्वास होता है कि वास्तविक गुरु के प्रति श्रद्धा से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(v) इस प्रकार आदर्श विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा, दृढ़ इच्छाशक्ति अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या, सादा जीवन, गुरु के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास तथा सहपाठियों के संग कुशल व्यवहार से अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है जो उसकी इच्छा होती है। आदर्श छात्र के प्रति समाज, संस्था एवं अध्यापक का व्यवहार सहयोगात्मक रहता है। सभी छात्रों को आदर्श-छात्र बनने की ओर अग्रसर होना चाहिए।

ग- दीपावली

(i) हमारा देश बहुधर्मावलम्बियों का देश है जहाँ प्रतिवर्ष, प्रतिमास अनेक त्योहार आनंद एवं हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। इन त्योहारों में दीपावली एक अलग स्थान रखती है। दीपों के द्वारा इस उत्सव को मनाते हैं अतः इसे 'दीपोत्सव' भी कहा जाता है।

(ii) यह त्योहार कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या की तिथि को मनाया जाता है। इस दिन लोग अपने घर एवं बाहर अमावस्या की घनघोर अँधेरी रात में दीपों की आवलियों (कतारों) को जलाते हैं।

(iii) इसके पीछे कथा है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम इसी दिन रावण को मार कर अयोध्या आए थे। राम के आगमन की खुशी में अयोध्या के लोग घी के दीप जलाकर दीवाली मनाये थे। इन्हीं मान्यताओं से लोग आज भी दीपावली मनाते हैं। रात में लक्ष्मी-गणेश की भी पूजा-अर्चना करते हैं। मिठाइयाँ खाते-खिलाते हैं तथा रातभर जगते हैं। घर की बुजुर्ग महिलाएँ सूप भी पीटती हैं। इसके पीछे मान्यता है कि इससे दरिद्रता भाग जाती है।

(iv) इस पर्व में साफ-सफाई पर लोग पूरा ध्यान देते हैं। 15 दिन एक महीना पहले से ही लोग घर को रंगना-पोतना प्रारम्भ कर देते हैं। घर, अँगना, गली, महल्ला एवं गाँव सभी साफ एवं सुन्दर दिखने लगते हैं। बरसात के पश्चात् जो घास-फूस एवं गन्दगी चारों ओर फैली रहती है सबको इस त्योहार से पूर्व लोग साफ कर देते हैं। मच्छर एवं अन्य कीटों की संख्या कम हो जाती है। पर्यावरण शुद्ध हो जाता है।

(v) दीपावली के दिन पटाखे और आतिशबजियों को जलाने से पर्यावरण अशुद्ध होता है, इसलिए यह नहीं करना चाहिए। पटाखों का उपयोग नहीं करने के

बाद दीपावली धार्मिक दृष्टि से एवं पर्यावरण की दृष्टि से मानव-समाज के लिए एक उपयोगी त्योहार है। इसे हमें निश्चय ही मनाना चाहिए।

उत्तर-3- आदरणीय भैया दिनांक-08.12.2016

सादर प्रमाण। रोहतासगढ़

मैं कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि आप भी ईश्वर की कृपा से कुशल होंगे। शैक्षिक परिभ्रमण के लिए मेरे विद्यालय से बस पटना गई थी। मैं भी छात्रों के समूह में था। मैं पटना में गोलघर, संजय गाँधी जैविक उद्यान, विधानसभा, सचिवालय, महावीर मंदिर, रेलवे स्टेशन, गाँधी मैदान गया था। यह प्ररिभ्रमण बहुत ही अच्छा रहा। मैं पहली बार पटना आया था। जाने-आने के क्रम में महात्मा गाँधी सेतु को भी देखा। मैं मन लगा कर पढ़ रहा हूँ। घर के सभी लोग ठीक हैं। भाभी को प्रणाम एवं बच्चों को आशीर्वाद।

आपका छोटा भाई
निरंजन कुमार
वर्ग- X (खण्ड-क)

उत्तर-3- अथवा-

सेवामें,

श्रीमान् जिलाधिकारी महोदय,
पटना।

विषय- गाँव में सड़क बनवाने के सम्बन्ध में।

महाशय,

निवेदन है कि मेरा गाँव, शहर से 50 कि.मी. की दूरी पर अवस्थित है। मेरे गाँव के मध्य से एक सडक निकलती है जो 4 कि.मी. की दूरी पर शहर

की ओर जानेवाली मुख्य मार्ग में मिल जाती है। आज तक मेरे गाँव की सड़क का निर्माण नहीं हो पाया है।

अत: आपसे अनुरोध है कि मेरे गाँव की सड़क बनवाने की कृपा करें। इसके लिए मैं एवं मेरे गाँव के लोग सदा आपके आभारो रहेंगे।

दिनांक–18.12.2016 आपका विश्वासभाजन

सुनील कुमार

कक्षा– X (अ)

ग्राम– सहियारा जिला–पटना

उत्तर–4– सर्वनाम के निम्नलिखित भेद हैं–

(i) पुरुषवाचक– मैं, तू, वह, ।

(ii) निजवाचक– आप, स्वयं।

(iii) निश्चयवाचक– यह, वह, ।

(iv) अनिश्चयवाचक– कोई, कुछ।

(v) प्रश्नवाचक– कौन? क्या?

(vi) सम्बन्धवाचक– जो, सो।

उत्तर–4 अथवा

उपसर्ग– उपसर्ग वह शब्दांश है जो किसी शब्द के पहले आकर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाता है, जैसे– प्र– प्रहार, बे–बेईमान ।

प्रत्यय– जो शब्दांश शब्दों के बाद लगाये जाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं, जैसे– भला+ आई = भलाई, मनुष्य+ता = मनुष्यता।

उत्तर – 5 (क) द्वन्द्व

(ख) प्र

(ग) कंठ

(घ) विद्या+आलय

(च) भाववाचक संज्ञा

उत्तर-6(i) उसकी समझ में कुछ भी न आया।

(ii) माँ भी नींद से जाग पड़ीं।

(iii) उसने मानस की टीका लिखी।

(iv) मैं गाय का शुद्ध दूध पीता हूँ।

(v) पिछले वर्ष तुम आये थे।

उत्तर-7 1- च

2- ग

3 - घ

4 - छ

5- क

6 - ख

उत्तर-8 डुमराँव की महत्ता विश्वविख्यात शहनाई वादक विस्मिल्ला खाँ के कारण है क्योंकि वहीं के एक गाँव में उनका जन्म हुआ था। डुमराँव को आजकल बिस्मिला खाँ की जन्मभूमि के रूप में जानते हैं।

उत्तर-9 जिस वाणी में राम नाम का लेश मात्र न हो, वह वाणी विष के समान हो जाती है।

उत्तर-10 मैक्समूलर की दृष्टि में सच्चे भारत का दर्शन शहरों में नहीं बल्कि गाँव में ही हो सकता है। भारत की संस्कृति गाँव और कृषि से जुड़ी है। इसलिए भारत की असली पहचान गाँवों में घूमने तथा वहाँ की परम्परा से अवगत होने से

ही पता चल सकता है, वहाँ के रहन-सहन, रीति-रिवाज को देखना चाहें, तो वह गाँवों में जाकर ही प्राप्त हो सकता है।

उत्तर-11 संतु अबोध बालक था। उसे इस बात का पता नहीं था कि मछली काटती भी है। इसलिए वह मछली छूते हुए हिचक रहा था।

उत्तर-12 क- विष के दाँत

ख- नलिन विलोचन शर्मा

ग- यह सामाजिक संरचना का यथार्थ है कि महल और झोपड़ीवालों की लड़ाई में महल वाले ही प्राय: विजयी होते हैं पर यह भी तथ्य सही है कि धनी वर्ग की विजय उसी हालत में होती है जब गरीब तबके के लोग अपने ही वर्ग के विरुद्ध धनी वर्ग की मदद करते हैं। निर्धनों में एकता होने पर धनी वर्ग के विजयी होने की सम्भावना पूरी तरह समाप्त हो जाती है।

उत्तर-13 'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक कविता अत्यंत प्रासंगिक है। इसमें काटे गए वृक्ष के प्रति कवि की संवेदना पाठक को एक वैचारिक धरातल प्रदान करती है। कवि इसी बहाने पर्यावरण के प्रति मनुष्य के उपेक्षाभाव और मानवीय सभ्यता के विनाश का उल्लेख करता है और इन दोनों की रक्षा के लिए अपनी तत्परता व्यक्त करता है।

उत्तर-14 प्रस्तुत पंक्ति सुमित्रानन्दन पन्त की कविता 'भारत माता' से उद्धृत है। कवि कहते हैं कि भारत माता अत्यंत समृद्ध हैं। वह अकूत धन-सम्पदा की स्वामिनी हैं पर आज वह इस परतंत्रता की स्थिति में दूसरे के पैरों तले रौंदी

जा रही हैं। इससे उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचती है और इसके चलते उनका मन कुंठित हो गया है। उनके भीतर धरती के समान सहनशीलता है। वह सारी मुसीबतों को सहज भाव से सह लेती हैं।

उत्तर-15 इसके माध्यम से कवि, मजदूर और किसान रूपी आज के देवता की बात करते हैं। ये आज के देवता, मंदिरों, राज-प्रासादों, तहखानों में नहीं मिलेंगे, ये तो सड़कों पर गिट्टी तोड़ते और खेतों, खलिहानों में काम करते मिलेंगे।

उत्तर-16 कवि अपनी कविता में उस बंगाल में लौटकर आने की बात करता है जहाँ अनेक नदियाँ कल-कल करती हुई बहती रहती हैं, जिसके किनारे धान की लहलहाती फसलें है, छोटे-छोटे पक्षी भ्रमण कर रहे हैं तथा सर्वत्र प्राकृतिक वातावरण हर किसी को आकर्षित करता रहता है।

उत्तर-17 **क**- 'एक वृक्ष की हत्या' शीर्षक पाठ से उद्धृत है।

ख- इस पाठ के रचनाकार कुँवर नारायण हैं।

ग- इस पद्यांश के माध्यम से कवि पर्यावरण, मनुष्य और सभ्यता के विनाश की अंतर्व्यथा को अभिव्यक्त करते हैं। इन दोनों की रक्षा के लिए अपनी तत्परता व्यक्त करते हैं। कवि की दृष्टि में भौतिकवादी संस्कृति के पोषक तथा उपभोगी प्रवृत्ति को अतिशय महत्त्व देनेवाले लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए नदियों के शुद्ध जल को कचरे से भर रहे हैं, हवा को धुआँ से दूषित कर रहे हैं और मानव के खाद्य पदार्थों को जहरीला बना रहे हैं। औद्योगिक विकास के चलते जंगल धड़ाधड़ कट रहे हैं। मरुस्थल का विस्तार होता जा रहा है। कवि की आशंका है कि सृष्टि और मानवता को नष्ट करने

की एक बहुत बड़ी साजिश की जा रही है। कवि पर्यावरण और मानवता की रक्षा करने को कटिबद्ध हैं।

उत्तर-18 मंगु के प्रति माँ और परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार में बहुत फर्क है। माँ की चार सन्तानें हैं- दो पुत्र और दो पुत्रियाँ। जन्मना पागल, गूँगी मंगु के उपर माँ का विशेष स्नेह वर्षण होता है। मंगु के प्रति माँ के खिंचाव में मातृत्व की ही भावना है परन्तु परिवार के अन्य सदस्यों की ऐसी भावना नहीं रहती है। वे चौदह वर्षीय पागल और गूँगी मंगु से माँ के इस प्रकार चिपकने को माँ का पागलपन ही मानते हैं। वे तो यहाँ तक सोचते हैं कि मंगु मर जाए ता अच्छा क्योंकि इससे मंगु को भी कष्टों से छुटकारा मिल जाएगा और कुटुम्ब को भी मंगु से छुटकारा मिल जाएगा।

उत्तर-19 पाप्पाति मूनांडिप्पट्टि गाँव की वल्लि अम्माल की 12 वर्षीय पुत्री थी। वल्लि अम्माल तेज बुखार के चलते उसे अपने गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर ले गई। वहाँ के डॉक्टर ने पाप्पति को शहर के बड़े अस्पताल में दिखाने की सलाह दी। वल्ली अम्माल अपनी बेटी को शहर (मदुरै) के बड़े अस्पताल में भर्ती कराने के लिए ले गई थी।

उत्तर-20 'मंगम्मा' 'दही वाली मंगम्मा' कहानी की नायिका है। वह आत्मनिर्भर है। दही बेचकर वह अपना, बहू-बेटा एवं परिवार का भरण-पोषण करती है, मदद करती है। वह कुशल विक्रेता है। मीठी आवाज में बोलती है एवं लोगों से हाल-चाल भी पूछती है। स्नेहमयी एवं स्वाभिमानी है। वह अपने पोते के साथ दूसरे बच्चों को भी प्यार करती है एवं दही भी देती है। बहू से कहा-सुनी होने पर अलग किये जाने पर बहू के सामने झुकती नहीं है। क्षमा नहीं माँगती

है। मंगम्मा अंधविश्वासी भी है। यह उच्च चरित्र की महिला है। रंगप्पा के प्रेमजाल में नहीं फँसती है। यह मान-सम्मान की भूखी है। जब इसके बहू एवं बेटा क्षमा माँगते हैं एवं सम्मानपूर्वक अपने साथ रहने की प्रार्थना करते हैं तो वह अस्वीकार नहीं करती है।

इस प्रकार मंगम्मा, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, मृदुभाषी, स्नेहमयी अंधविश्वासी एवं उच्च चरित्र की महिला है जो मान-सम्मान एवं स्नेह की भूखी है।